REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 12 | ISSUE - 4 | JANUARY - 2023

रायपुर कर्चुलियान विकासखण्ड की जनजातीय महिलाओं के स्वास्थ का अध्ययन

श्वेता त्रिपाठी[1] , डॉ. श्रीनिवास मिश्र[2]
[1]शोधार्थी समाजशास्त्र, शासकीय ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय, रीवा (म.प्र.)
[2]प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष समाजशास्त्र, शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अमरपाटन, जिला सतना (म.प्र.)

सारांश –

रायपुर कर्चुलियान विकासखण्ड के स्वास्थ्य विभाग द्वारा प्राथमिक स्तर के स्वास्थ्य सम्बन्धी सुविधाओं के जनजातीय को उपलब्ध कराया जा रहा है, जिससे उन्हें सामान्य स्तर की बीमारियों हेतु दूर नहीं जाना पड़ता है, और साथ ही क्षेत्र के आंगनवाड़ी केन्द्रों से गर्भवती महिलाओं एवं नवजात शिशुओं का समय पर टीकाकरण किया जा रहा है एवं उनके स्वास्थ्य को दृष्टिगत रखते हुए दलिया, फल एवं पोषक आहार की उपलब्ध कराये जाने की शासन स्तर पर व्यवस्था की गई, जिससे विकासखण्ड की महिलाओं को सशक्त होने का अवसर प्राप्त हो रहा है। यही कारण है कि विकासखण्ड में महिला सशक्तीकरण की विचारधारा प्रफुल्लित हो रही है, जो क्षेत्र के विकास एवं महिलाओं के विकास की दृष्टि से उत्तम है।

मुख्य शब्द – रायपुर कर्चुलियान, जनजातीय, महिला, स्वास्थ्य एवं बीमारिया।

प्रस्तावना –

मनुष्य अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति तभी कर सकता है, जब वह शारीरिक रूप से स्वस्थ एवं निरोग हो और यह उचित एवं संतुलित आहार से ही सम्भव हो सकता है। यह तभी संभव है जब व्यक्ति को बीमारियों की जानकारी हो और उनको नियंत्रित करने हेतु पर्याप्त सुविधायें उपलब्ध हो। इसलिए वर्तमान समाज में मानव जीवन के खुशहाल हेतु चिकित्सा सुविधा एक आवश्यक अंग बन चुका है। प्रत्येक समाज में रहन–सहन का स्तर उनके स्वास्थ्य पर निर्भर करता है। जनजातियों में स्वस्थ रहने के लिए प्राचीन काल से ही उपचार के साधनों के रूप में गुनिया, ओझा, टोटका, बलिपूजा, झाड़–फूंक, दान दक्षिणा, तंत्र–मंत्र एवं टोना–टोटके इत्यादि का प्रचलन रहा है। वर्तमान समय में भी जनजातियों का उपर्युक्त सभी से सम्बन्ध दिखते हैं। इसे वास्तव में अज्ञानता, अंधविश्वास, अशिक्षा, एवं जनजातियों के पिछड़ेपन से जोड़ा जा सकता है। इस बदलते परिवेश में आधुनिक चिकित्सा के नवीन साधनों को अपनाया जा रहा है। स्वास्थ्य रक्षा से व्यक्ति एवं देश का विकास सम्भव होता है। वास्तव में इस दिशा में निरन्तर हो रहे प्रयासों द्वारा प्रचार–प्रसार के साधन, विभागीय प्रशिक्षण, परिवार कल्याण कार्यक्रम, शिविरों का आयोजन, समय–समय पर आयोजित प्रदर्शनियां, स्वास्थ्य गोष्ठियां, चलचित्रों एवं विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों के साथ ही अनेक प्रोत्साहन संचालित है, जिसे प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से वे जातियां प्रभावित हुई हैं। यही कारण है कि सफाई, जनस्वास्थ्य, औषधि वितरण, मातृ शिशु कल्याण, प्राथमिक एवं उपस्वास्थ्य केन्द्रों में परिचारिकाओं की नियुक्ति तथा सुविधायें, टीकाकरण, स्वास्थ्य परीक्षण एवं

पेयजल शुद्धीकरण इत्यादि से सम्बन्धित सुविधाओं का लाभ जैसी विकासात्मक योजनाओं को लागू करने के प्रयास किये जा रहे हैं।

विश्लेषण –

जनजातीय महिलाओं का सर्वेक्षण करने से ज्ञात हुआ है कि विकासखण्ड की जनजातियां विभिन्न प्रकार की बीमारियों से ग्रसित है। इनमें प्रमुख रूप से खाज–खुजली, बुखार, खांसी, बात, छोटी चेचक, डेंगू एवं मलेरिया इत्यादि ऐसी भयावह बीमारियां हैं, जिससे जनजातियों का कोई भी परिवार अछूता नहीं है। कुछ व्यक्ति तपेदिक एवं कैंसर जैसी असाध्य बीमारियों से भी ग्रसित हैं। विकासखण्ड की जनजातीय महिलाओं द्वारा बीमारियों के निराकरण हेतु जिन साधनों का उपयोग किया जाता है, उसका विवरण क्रमशः इस प्रकार है –

झाड़–फूंक द्वारा –

रायपुर कर्चुलियान विकासखण्ड में अभी भी जनजातियों में जादू–टोने पर विश्वास किया जाता है, इसलिये सर्वप्रथम चौरा, औसाई, झाड़–फूंक एवं दियावत द्वारा बीमारी दूर करने का प्रयास करते हैं। जनजातियों के बीच ऐसी धारणा है कि इससे उनकी बीमारी में कुछ हद तक दूर करने में मदद भी मिलती है और कभी–कभी झाड–फूंक करते–करते रोगी की मृत्यु भी हो जाती है, जिसके कारण वर्तमान समय में धीरे–धीरे जनजातियों का विश्वास झाड–फूंक एवं जादू–टोने पर से कम हो गया है और उनके बीच स्वास्थ्य एवं आहार से सम्बन्धित आधुनिक साधनों का महत्व एवं उपयोग काफी बढ़ता जा रहा है।

आधुनिक चिकित्सा पद्धति द्वारा –

रायपुर कर्चुलियान विकासखण्ड क्षेत्र के अन्तर्गत अध्ययन हेतु चयनित कुल 200 जनजातीय महिलाओं का सर्वेक्षण करने से स्पष्ट हुआ है कि विकासखण्ड में कुल 20 प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों की स्थापना की गई है, लेकिन बीमारी बड़ी व घातक होने की दशा में उन्हें विकासखण्ड के प्रमुख भाग अर्थात् रीवा जिले में स्वास्थ्य परीक्षण हेतु आना पड़ता है, जो विकासखण्ड से लगभग 14 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। विकासखण्ड की जनजातीय समाज में शासकीय सुविधाओं की कमी होने के कारण सम्पूर्ण क्षेत्र में अभी भी नीम हकीम फैले हुए हैं, जो जनजातियों का शोषण कर रहे हैं, परन्तु इसके बाद भी महिलाओं के सशक्त होने के कारण उनके द्वारा आधुनिक चिकित्सा पद्धति को व्यापक रूप में स्वीकार किया जा रहा है, जिसके परिप्रेक्ष्य में जनजातीय महिलाओं से स्वास्थ्य और आहार के सम्बन्ध में प्राप्त की गयी जानकारियों को निम्नांकित उपशीर्षकों के अन्तर्गत रखकर अध्ययन किया गया है ।

रायपुर कर्चुलियान विकासखण्ड के जनजातीय महिलाओं से उनके परिवार के सदस्यों के स्वास्थ्य अच्छे होने व न होने से सम्बन्धित प्राथमिक समंकों को सर्वेक्षण के दौरान साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से संकलित कर सारणी क्रमांक 1 में प्रस्तुत कर विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है, जो क्रमशः इस प्रकार है–

सारणी क्रमांक 1
जनजातीय महिलाओं के परिवार के सदस्यों के स्वास्थ्य सम्बन्धी

क्र.	उत्तरदाता महिलाओं का वर्ग	उत्तरदाता महिलाओं से प्राप्त अभिमतों का संग्रहण			
		हां	प्रतिशत	नहीं	प्रतिशत
1	गोंड	66	33	17	9
2	कोल	30	15	16	8
3	पनिका	22	11	6	3
4	बैगा	28	14	4	2
5	अगरिया	8	4	3	1
	कुल योग	154	77	46	23

स्रोत– प्राथमिक सर्वेक्षण पर आधारित

सारणी क्रमांक 1 को देखने से स्पष्ट होता है कि यह जनजातीय महिलाओं के परिवार के सदस्यों के स्वास्थ्य के विवरण से सम्बन्धित है, जिनमें उत्तरदाता के अन्तर्गत गोंड जनजातीय की 66 महिलाओं ने बताया कि परिवार के सदस्यों का स्वास्थ्य अच्छा रहता है और 17 महिलाओं ने बताया कि परिवार के सदस्यों का स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहता है, जिनके प्रतिशत क्रमशः 33 व 9 हैं। इसी प्रकार कोल जनजातीय की 30 महिलाएं स्वीकार किया कि उनके परिवार के सदस्यों का स्वास्थ्य उत्तम रहता है और 16 महिलाएं स्वीकार किया कि स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहता है, जिनके प्रतिशत 15 व 8 हैं। इसी अनुक्रम में पनिका जनजातीय की 32 महिलाओं ने बतलाया कि परिवार के सदस्यों का स्वास्थ्य ठीक रहता है और 6 महिलाओं ने बताया कि परिवार के सदस्यों का स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता है जिनकी प्रतिशत 11 व 3 है। इसी प्रकार बैगा जनजातीय की 28 महिलाओं ने बताया कि परिवार के सदस्यों का स्वास्थ्य अच्छा रहता है और 4 महिलाओं ने बतलाया कि परिवार के सदस्यों का स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहता है, जिनके प्रतिशत 14 एवं 2 है। इसी अनुक्रम में अगरिया जनजाति की 8 महिलाओं ने स्वीकार किया कि परिवार के सदस्यों का स्वास्थ्य ठीक रहता है और 3 महिलाओं ने बताया कि स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहता है, जिनका प्रतिशत 4 तथा 1 है। अतः इससे सुस्पष्ट हो रहा है कि रायपुर कर्चुलियान विकासखण्ड के सर्वाधिक चयनित जनजातीय महिलाओं ने स्वीकार किया कि उनके परिवार के सदस्यों का स्वास्थ्य अच्छा रहता है।

निष्कर्ष –

निष्कर्षतः उपर्युक्त जनजातीय महिलाओं के स्वास्थ्य सम्बन्धी तथ्यों का विश्लेषणात्मक अध्ययन करने से स्पष्ट होता है कि रायपुर कर्चुलियान विकासखण्ड की जनजातीय समाज की महिलायें महिला सशक्तीकरण की विचारधारा से जुड़कर अपना अस्तित्व समाज पर कायम करने में सफल हो रही हैं, जो देश के निर्धन व असहाय वर्ग के लोगों के आर्थिक विकास को एक सम्बल प्रदान करेगा और इससे विकासखण्ड के साथ–साथ राज्य के सम्पूर्ण क्षेत्रों व देश में समरसता का भाव प्रसार होगा और समाज से वर्ग विभेद का समापन होगा।

संदर्भ –

1. Prof. Radhesharan - Vindhya Kshetra Ka Itihas, Madhya Pradesh Hindi Granth Akademi, Bhopal, Year 2001
2. Gaveshana Sandarbh and Prashikshan Prabhag, India, Year, 2008
3. अखिलेश शुक्ल – रीवा दर्शन, गायत्री पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, रीवा, संस्करण ल्मंत 2013.14
4. Prof. V. C. Sinha and Dr. Pushpa Sinha - Indutstrial Economics, Lok Bharti Praskashan, 15 A, Mahatma Gandhi Magr, Allahabad, Year 1988-89
5. अखिलेश शुक्ल – रीवा दर्शन, गायत्री पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, रीवा, संस्करण 2006–07